DOI-10.53571/NJESR.2022.4.9.6-14

बाँदा जिले के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों मे सेवारत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की कार्य व्यवसाय के प्रति अभिवृति एवं सन्तुष्टि का अध्ययन।

श्री सर्वेश कुमार शुक्ला
(सहायक प्राध्यापक)
रामकृष्ण विवेकानंद कॉलेज ऑफ एजुकेशन,बगोदर, गिरिडीह, झारखंड

(Received:11August 2022/ Revised:20 August 2022/ Accepted: 25 September 2022/Published 30 September 2022)

सारांश :–

शिक्षक, शिक्षार्थी तथा सामाजिक परिवेश मे शिक्षण प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग माने जाते हैं। शिक्षक की कार्य व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का प्रभाव उसके कार्य की गुणवत्ता पर दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि एवं अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। पूर्व माध्यमिक स्तर के 25 पुरुष व 25 महिला शिक्षकों के न्यादर्श पर सर्वेक्षण विधि से कार्य किया गया है। व्यवसायिक संतुष्टि एवं अभिवृत्ति मापनी को प्रशासित किया गया है। सांख्यकी गणना द्वारा अध्यापक व अध्यापिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। दोनों समूहों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया गया। पुरुष व महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि व अभिवृत्ति के मध्य कोई संबंध नहीं पाया गया।

प्रस्तावना :–

शिक्षा मनुष्य का आभूषण एवं उसके विकास का मूल आधार है। शिक्षा के द्वारा बालक की शारीरिक, मानसिक और आंतरिक शक्तियों (क्षमताओं) का विकास होता है। इस प्रक्रिया के संबंध में 'प्लेटो' ने कहा है कि– ''शारीरिक, मानसिक तथा बौधिक विकास की प्रक्रिया ही शिक्षा है।''

शिक्षा प्रक्रिया के तीन स्तंभ हैं– शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यवस्तु। शिक्षक के द्वारा पाठ्यवस्तु को सरल एवं बोधगम्य बनाया जा सकता है। शिक्षार्थी पाठ्यवस्तु भली–भांति ग्रहण करके उचित पथ पर अग्रसर हो सकता है। जबकि अच्छी पाठ्यवस्तु के माध्यम से शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

भारतीय शिक्षा को तीन भागों में बांटा जा सकता है :–

1. प्राथमिक शिक्षा।
2. माध्यमिक शिक्षा।
3. उच्च शिक्षा।

शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध के निम्न उद्देश्य हैं –

1. पूर्व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
2. पूर्व माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
3. पूर्व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का अध्ययन।
4. पूर्व माध्यमिक स्तर के शिक्षिकाओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का अध्ययन।
5. पूर्व माध्यमिक विद्यालय में अध्यापकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृति एवं संतुष्टि के मध्य संबंध का अध्ययन।
6. पूर्व माध्यमिक विद्यालय में अध्यापिकाओं की व्यवसाय के प्रति अभिवृति एवं संतुष्टि के मध्य संबंध का अध्ययन।

परिकल्पनायें :–

यहाँ शून्य परिकल्पना का प्रयोग किया गया है, जिसमें यह मान लिया जाता है कि– दोनों चरणों में कोई संबंध नहीं है। प्रस्तुत शोध की परिकल्पनायें निम्नवत है–

1. पूर्व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. पूर्व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. पूर्व माध्यमिक स्तर के शिक्षिकाओं की कार्य व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं संतुष्टि में कोई संबंध नहीं है।
4. पूर्व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की कार्य व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं संतुष्टि में कोई संबंध नहीं है।

परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध की परिसीमायें निम्नलिखित हैं–

1. प्रस्तुत शोध के अध्ययन के लिए जनपद 'बाँदा' को ही चुना गया है।
2. प्रस्तुत शोध के अध्ययन के लिए 25 शिक्षकों को ही चुना गया है।
3. प्रस्तुत शोध के अध्ययन के लिए 25 शिक्षिकाओं को ही चुना गया है।
4. शोधकर्ता ने अपने प्रस्तुत शोध के लिए 25 विद्यालयों को ही चुना है।
5. शोधकर्ता ने अपने प्रस्तुत शोध के अध्ययन के लिए पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यालय का ही चुनाव किया है।

शोध प्रक्रिया :–

1. शोध विधि :–

समस्या, उद्देश्य एवं परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत 'सर्वेक्षण विधि' को अपनाया गया है।

2. न्यायदर्श :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने पूर्व माध्यमिक स्तर के 25 शिक्षकों और 25 शिक्षिकाओं पर अध्ययन किया है जो 25 विद्यालयों से है। अतः शोधकर्ता ने 'उद्देश्यपूर्ण' न्यादर्श विधि का प्रयोग किया है।

3. उपकरण :–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने डॉक्टर एस० के० मंगल की 'कार्य संतोष मापनी' तथा डॉ० एस० पी० अहलूवालिया की अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया है।

4.चर :–

प्रस्तुत शोध में चोरों का वर्गीकरण नियमानुसार किया गया है–

1.**स्वतंत्र_चर–** पुरूष शिक्षक, महिला शिक्षक

2.**आश्रित चर–** व्यवसायिक संतुष्टि जनतांत्रिक अभिवृत्ति।

सांख्यिकीय विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सहसंबंध की गणना की गई है।

परिकल्पना क्रमांक–01

''पूर्व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।''

सारणी क्रमांकः–01

पूर्व माध्यमिक विद्यालय के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृति के प्राप्तांको का t मान

समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	प्रमाणिक त्रुटि	क्रान्तिक निष्पति	स्वतन्त्रता की कोटि
पूर्व माध्यमिक स्तर की अध्यापिकायें	25	245.320	31.585	8.906	0.970	48
पूर्व माध्यमिक स्तर के अध्यापक	25	336.680				

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि– पूर्व माध्यमिक स्तर के अध्यापिकाओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति के प्राप्तांकों का मध्यमान 245.320 है, जबकि अध्यापकों के प्राप्तांकों का मध्यमाण 236.680 है, तथा शिक्षिकाओं और शिक्षकों के परीक्षण में प्राप्तांकों का मानक विचलन 31.585 तथा प्रमाणिक त्रुटि 8.906 है एवं क्रांतिक निष्पत्ति 0.970 है। स्वतंत्रता की कोटि 48 के सापेक्ष 0.05 तथा 0.01 स्तर पर सारणी मान क्रमशः 2.01 तथा 2.68 है। अतः दोनों स्तर पर t मान कम है। अतएव हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि– पूर्व माध्यमिक स्तर की अध्यापिकायें तथा अध्यापक के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना क्रमांकः–02

''पूर्व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।''

सारणी क्रमांकः–02

पूर्व माध्यमिक विद्यालय के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के प्राप्तांको का t मान

समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	प्रमाणिक त्रुटि	क्रान्तिक निष्पति	स्वतन्त्रता की कोटि
पूर्व माध्यमिक स्तर की अध्यापिकायें	25	345.640	69.022	19.464	1.859	48
पूर्व माध्यमिक स्तर के अध्यापक	25	381.840				

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि– पूर्व माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं के संतुष्टि प्राप्तांको का मध्यमान 345.640 है, जबकि अध्यापकों के संतुष्टि का मध्यमान 381.840 है तथा अध्यापिकाओं तथा अध्यापक के संतुष्टि परीक्षण के प्राप्तांकों का मानक विचलन 69.022 एवं प्रमाणिक त्रुटि 19.464 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 1.859 है। स्वतंत्रता की कोटि 48 के सापेक्ष 0. 05 तथा 0.01 स्तर पर सारणी मान क्रमशः 2.01 तथा 2.68 है। अतः दोनों स्तर पर आंकड़ों का टी० मान कम है। अतएव हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इस प्रकार या सिद्ध होता है कि– पूर्व माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं तथा अध्यापकों के कार्य व्यवसाय के प्रति संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना क्रमांक–03

''पूर्व माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं की कार्य व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं संतुष्टि में कोई संबंध नहीं है।''

सारणी क्रमांकः– 03

शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि एवं अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण–

अध्यापिकाओं की संख्या	अध्यापिकाओं के कार्य व्यवसाय के प्रति अभिवृति एवं संतुष्टि के प्राप्तांकों की श्रेणी के अंतर के वर्गों का योग	सह–सम्बन्ध
25	1364	0.47

सारणी देखने से ज्ञात होता है कि– पूर्व माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति तथा संतुष्टि के प्राप्तांकों की श्रेणी के अंतर के वर्गों का योग $\sum d^2$1364 तथा व्यवसाय के प्रति अभिवृति एवं संतुष्टि का सहसंबंध गुणांक 0.47 है, जो +0.40 से +0.70 के मध्य आता है। अतः मध्यम श्रेणी का धनात्मक सहसंबंध है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना सिद्ध नहीं होती है।

परिकल्पना क्रमांकः–04

''पूर्व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की कार्य व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं संतुष्टि में कोई संबंध नहीं है।''

सारणी क्रमांकः–04

शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि एवं अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण–

अध्यापकों की संख्या (no.)	अध्यापकों के कार्य व्यवसाय के प्रति अभिवृति एवं संतुष्टि के प्राप्तांकों की श्रेणी के अंतर के वर्गों का योग	सह–सम्बन्ध P(rho)
25	1235.5	0.52

सारणी देखने से ज्ञात होता है कि– पूर्व माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं संतुष्टि के प्राप्तांकों के श्रेणी के अंतर के वर्गों का योग $\sum d^2$1235.5 है, तथा व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं संतुष्टि का सहसंबंध गुणांक 0.52 है, जो +0.40 से +0.70 के मध्य आता है। अतः मध्यम श्रेणी का धनात्मक सह–संबंध है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना सिद्ध नहीं होती है।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध में संकलित आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है–

1. प्रथम परिकल्पना के आधार पर या निष्कर्ष निकलता है कि– पूर्व माध्यमिक स्तर की अध्यापिका और अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. द्वितीय परिकल्पना के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि– पूर्व माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं एवं अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. तृतीय परिकल्पना के अनुसार पूर्व माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं का कार्य व्यवसाय के प्रति अभिवृति एवं संतुष्टि के मध्यम श्रेणी का धनात्मक संबंध पाया गया।

4. चतुर्थ परिकल्पना के अनुसार पूर्व माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की कार्य व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं संतुष्टि मे मध्यम श्रेणी का धनात्मक संबंध है।

सुझाव :–

शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत है–

1. शिक्षकों में कार्य संतुष्टि लाने हेतु विभाग द्वारा इनकी समस्याओं का युक्ति पूर्वक निवारण किया जाना चाहिए।

2. विद्यालयों में रिक्त पदों की पूर्ति यथासंभव शीघ्र किया जाना चाहिए। इससे शिक्षकों तथा कर्मियों का कार्यभार संतुलित होगा, जिसका विद्यार्थियों तथा समाज पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।

3. शिक्षा कर्मियों व विभागीय शिक्षकों हेतु समय–समय पर संगोष्ठीयां, कार्यशालाओं एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। साथ ही उन्हें उत्तम कार्य हेतु प्रशंसा, पुरस्कार द्वारा भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इन कार्यक्रमों से शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ–साथ अध्यापन कार्य में भी वृद्धि होगी।

संदर्भ :–

1. अग्रवाल जे० सी०– शैक्षिक तकनीकी तथा प्रबंध के मूल तत्व विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृष्ठ संख्या–29 – 30

2. कपिल एच० के०– अनुसंधान विधियां, मार्ग व बुक हाउस कचहरी घाट आगरा, पृष्ठ संख्या– 20

3. गैरेट हैगरी ई०– शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिकेशन कोलकाता, पृष्ठ संख्या– 124–126

4. गुप्त रामबाबू –शिक्षा मनोविज्ञान, अलका प्रकाशन कानपुर, पृष्ठ संख्या– 55

5. राय पारसनाथ अनुसंधान परिचय, एच०एम० पब्लिकेशन आगरा ,पृष्ठ संख्या– 25–26

6. बुच० एम० बी०– पंचम शैक्षिक अनुसंधान (1988–92) वाल्यूम द्वितीय, पृष्ठ संख्या– 1185–86 1479–1494